

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ उनसठ

दानियेल के दर्शन में तीन स्वर्गदूतीय स्पर्शों का अनावरण: एक भविष्यसूचक प्रकटीकरण

Jeff Pippenger

2024-03-26

दसवें अध्याय में दानियेल को तीन बार स्पर्श किया जाता है, और वे तीनों स्पर्श उन तीन अवसरों के अनुरूप हैं जब दानियेल व्यक्तिगत रूप से “मरेह,” अर्थात् दर्शन, का अनुभव करता है। पहला और अंतिम प्रकट होना गब्रिएल का था, जो यीशु मसीह के प्रकाशन का दूत है। गब्रिएल वही है जो मसीह से—जो उन्हें पिता द्वारा दिया गया था—संदेश ग्रहण करता है, और उसे भविष्यद्वक्ता तक पहुँचाता है, जिसे उसे कलीसियाओं के पास भेजना है।

परन्तु मैं तुझे वह दिखाऊँगा जो सत्य की पुस्तक में लिखा है; और इन बातों में मेरे साथ ठहरने वाला कोई नहीं, केवल तुम्हारा प्रधान मीकाएल। दानियेल 10:21.

गब्रियल जानता है कि वह एक सृजित प्राणी है, और इसी कारण उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यहून्ना को स्पष्ट रूप से मना किया कि वह उसकी आराधना न करे।

और मैं उसे दण्डवत करने के लिये उसके चरणों पर गिर पड़ा। पर उसने मुझ से कहा, ऐसा मत कर; मैं तेरा और तेरे उन भाइयों का संगदास हूँ, जिनके पास यीशु की गवाही है। परमेश्वर की उपासना कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वक्ता की आत्मा है। प्रकाशितवाक्य 19:10।

अतः भविष्यवाणी का विद्यार्थी यह समझे कि गब्रिएल द्वारा यह पहचान कराना कि 'सत्य के धर्मग्रंथ में जो लिखा है' के संबंध में उससे ऊपर कोई नहीं है, एक विशेष भविष्यवाणी-संबंधी उद्देश्य रखता है। जब वह यह बताता है कि शास्त्रों को उससे बढ़कर केवल मसीह ही समझते हैं, वह मसीह की पहचान 'तुम्हारे राजकुमार मीखाएल' के रूप में करता है। पर मीखाएल केवल राजकुमार ही नहीं, वह महादूत है।

तथापि प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल ने, जब वह शैतान के साथ मूसा के शरीर के विषय में विवाद कर रहा था, तो उसके विरुद्ध निन्दात्मक दोषारोपण करने का साहस न किया, परन्तु कहा, प्रभु तुझे डाँटे। यहूदा 7.

अतः तीनों स्पर्श स्वर्गदूत के स्पर्श हैं, और जिन तीन बार डैनियल ने 'mareh,' दर्शन का अनुभव किया, वह स्वर्गदूत-संबंधी था। तीसरी बार डैनियल को छुआ गया उसे बल देने के लिए, क्योंकि इससे पहले, दूसरे स्पर्श पर, उसका बल चला गया था।

तब फिर एक मनुष्य के समान रूपवाला आकर मुझे छू गया, और उसने मुझे बल दिया, और कहा, “हे अति प्रिय मनुष्य, मत डर; तुझ पर शान्ति हो; दृढ़ हो, हाँ, दृढ़ हो।” और जब उसने मुझसे बातें कीं, तब मैं बल पा गया और कहा, “मेरे प्रभु बोलें, क्योंकि आपने मुझे बल दिया है।” तब उसने कहा, “क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूँगा; और जब मैं निकल जाऊँगा, तो देख, यूनान का प्रधान आएगा।” दानियेल 10:18-20.

जब गब्रिएल ने दानियेल से पूछा, “क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ?”, तब वह दानियेल को यह स्मरण दिलाता है कि वह “तुझे यह समझाने आया” था कि “अन्त के दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगी।” अन्त के दिनों के विषय में जो कुछ उसने दानियेल को सिखाया था, उसके अनुरूप गब्रिएल तब यह कहता है कि वह “फिर फारस के प्रधान से लड़ने को लौटेगा; और जब मैं निकल जाऊँगा, तो देख, यूनान का प्रधान आएगा।” इसके बाद वह ग्यारहवें अध्याय का भविष्यवाणीमय वृत्तांत आरम्भ करता है, जो वर्णन करता है कि अन्त के दिनों में एक लाख चवालीस हजार पर क्या बीतती है। वह भविष्यवाणीमय वृत्तांत “फारस के प्रधान” और “यूनान के प्रधान” के साथ होने वाली लड़ाई की पृष्ठभूमि में रखा गया है।

कुरुश महान और सिकंदर महान के बीच का वास्तविक अंतराल दो सौ से अधिक वर्षों का था। परंतु प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के महान भूकंप में अंतिम घटनाक्रम बहुत तेजी से घटित होते हैं, और जैसे ही उत्तर के नकली राजा द्वारा छठा राज्य विजित हो जाता है, सातवाँ राज्य, अर्थात् दस राजा, जिनका प्रतिनिधित्व यूनान करता है, तुरंत अपना राज्य पशु को देने पर सहमत हो जाते हैं।

एक स्तर पर "मरेह" दर्शन का प्रयोग दानिय्येल अध्याय दस में सात बार किया गया है। हम उन सात में से चार अवसरों पर विचार कर चुके हैं, और यह पहचाना है कि पहला उल्लेख यह है कि कूरेश के तीसरे वर्ष से पहले दानिय्येल उस दर्शन को समझता था। अगले तीन उल्लेखों में प्रत्येक दर्शन पर होने वाले तीन स्पर्श दानिय्येल के उस अनुभव की पहचान कराते हैं जब वह इक्कीस दिनों के शोक से जागृत होता है। उसके पुनर्जीवन की यह जागृति सनातन सुसमाचार की तीन-चरणीय प्रक्रिया पर संरचित है, और वे तीनों चरण स्वर्गदूतों द्वारा निरूपित किए गए हैं, यद्यपि दूसरा चरण प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल है, वही जिसने मूसा को मृत्यु से उठाया और उसे स्वर्ग में स्थानांतरित कर दिया।

अध्याय दस में "vision" शब्द जिन अन्य तीन बार आता है, वहाँ वह "mareh" नहीं है, बल्कि "marah" है। "Marah," "mareh" का स्त्रीलिंग रूप है। इसका अर्थ एक दर्शन है, और कार्यकारक अर्थ में "दर्पण" या "आईना" भी है। इसकी परिभाषा की कुंजी यह है कि यह "कार्यकारक" है। यह "appearance" का दर्शन है, परन्तु अपने लिंग में भिन्न होने के कारण यह एक भिन्न भविष्यद्वाणी-संदेश की पहचान कराता है। अपनी परिभाषा के अनुसार "दर्पण" यह संकेत करता है कि जो लोग इस दर्शन को देखते हैं, वे किसी प्रकार का प्रतिबिम्ब देखते हैं। शब्द का यही वह तत्व है जो "कार्यकारक" है। "Marah" के सन्दर्भ में किसी कार्यकारक शब्द की परिभाषा अत्यन्त गहन है।

"causative" शब्द कारणता की अवधारणा या किसी कार्य को घटित कराने की क्रिया से संबंधित है। भाषाविज्ञान में, विशेष रूप से क्रिया-रूपविज्ञान में, प्रेरणार्थक रूप एक व्याकरणिक संरचना है जो यह दर्शाती है कि वाक्य का कर्ता किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु से क्रिया द्वारा वर्णित कार्य को करवा रहा है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी में, क्रिया "to read" तब प्रेरणार्थक बन जाती है जब हम कहते हैं "to make someone read." यहाँ कर्ता किसी दूसरे व्यक्ति से पढ़ने की क्रिया करवाता है।

कारणवाचक रूप यह संकेत करता है कि कर्ता क्रिया द्वारा वर्णित कार्य को घटित कराने के लिए उत्तरदायी है। "कारणवाचक" उस प्रकार को संदर्भित करता है जिसमें किसी क्रिया या घटना को घटित कराया जाता है। जिन तीन अवसरों पर डैनियल ने हिब्रू शब्द "marah" का प्रयोग किया है, उन सब में जो दर्शन देखा जाता है, वह देखने वाले को उसी छवि में बदल देता है जिसे वह देख रहा है।

और पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस महान नदी के किनारे था, जो हिदेकेल है; तब मैंने अपनी आँखें उठाईं और देखा, और देखो, सन के वस्त्र पहने एक मनुष्य, जिसकी कमर ऊफ़ाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी: उसका शरीर भी बेरिल के समान था, और उसका मुख बिजली के रूप (mareh) के समान था, और उसकी आँखें आग के दीपकों के समान थीं, और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव रंग में चमकाए हुए पीतल के समान थे, और उसके वचनों की आवाज़ एक बड़ी भीड़ की आवाज़ के समान थी। और मैं दानियेल ही अकेला उस दर्शन (marah) को देख रहा था; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने उस दर्शन (marah) को नहीं देखा; पर उन पर बड़ा काँपना छा गया, इसलिए वे अपने को छिपाने के लिए भाग गए। इसलिये मैं अकेला रह गया, और मैंने यह बड़ा दर्शन (marah) देखा, और मुझ में कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरी शोभा मेरे भीतर भ्रष्टता में बदल गई, और मुझ में कुछ भी शक्ति न रही। तौभी मैंने उसके वचनों की आवाज़ सुनी; और जब मैंने उसके वचनों की आवाज़ सुनी, तब मैं मुँह के बल गहरी नींद में पड़ गया, और मेरा मुख भूमि की ओर था। दानियेल 10:4-9.

इक्कीस दिनों के शोक के अंत में, जो अंतिम दिनों में उन साढ़े तीन दिनों के साथ मेल खाते हैं जब दो गवाह सड़क पर मृत पड़े होते हैं, दानिय्येल को अचानक मसीह का रूप दिखाया गया, और उनका रूप "बिजली के रूप (mareh)

जैसा" है। वह घटना, प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के साढ़े तीन दिनों के अंत में, एक पृथक्करण उत्पन्न करती है, क्योंकि दानिय्येल के "साथ जो पुरुष थे" उन्हें "[देखना] वह दर्शन (marah) नहीं कराया गया; बल्कि उन पर बड़ी कंपकंपी छा गई, और वे अपने आपको छिपाने के लिए भाग गए। इसलिए" दानिय्येल "अकेला रह गया," परन्तु "मेरे साथ जो पुरुष थे [देखने के लिए बाध्य किए गए] वह दर्शन (marah) नहीं; बल्कि उन पर बड़ी कंपकंपी छा गई, और वे अपने आपको छिपाने के लिए भाग गए"।

जब दानिय्येल अकेला था, तब जो दर्शन उसने देखा, वह स्त्रीलिंग, कारणात्मक दर्शन था, जिसने दानिय्येल को उस दर्शन की छवि के अनुरूप बना दिया। यह रूपांतरण इस प्रकार पूरा हुआ कि दानिय्येल की मानवीय शक्ति दूर कर दी गई, और उसकी शोभा भ्रष्टता में बदल गई।

वह स्वयं देह, जिसमें आत्मा वास करती है और जिसके माध्यम से वह कार्य करती है, प्रभु की है। जीवित तंत्र के किसी भी भाग की उपेक्षा करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। जीवित शरीर का प्रत्येक अंश प्रभु का है। अपने शारीरिक संगठन के ज्ञान से हमें यह सीख मिलनी चाहिए कि प्रत्येक अंग धर्म के साधन के रूप में परमेश्वर की सेवा करे।

ईश्वर के सिवा कोई भी मनुष्य के हृदय के अभिमान को वश में नहीं कर सकता। हम अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकते। हम अपने आप को नया जन्म नहीं दे सकते। स्वर्गीय प्रांगणों में ऐसा कोई गीत नहीं गाया जाएगा: "मुझे—जिसने स्वयं से प्रेम किया, स्वयं को धोया, स्वयं को छुड़ाया—मेरी ही हो महिमा और आदर, आशीष और स्तुति।" पर इस संसार में बहुत से लोग जो गीत गाते हैं, उसका यही मुख्य स्वर है। वे नहीं जानते कि हृदय में नम्र और दीन होना क्या होता है; और यदि इससे बच सकें तो वे इसे जानना भी नहीं चाहते। पूरा सुसमाचार इसी में निहित है कि हम मसीह से उसकी नम्रता और दीनता सीखें।

"विश्वास द्वारा धर्मसिद्धि क्या है? यह परमेश्वर का कार्य है, जो मनुष्य की महिमा को धूल में मिला देता है, और मनुष्य के लिए वह करता है जो वह अपने लिए स्वयं नहीं कर सकता।" मंत्रियों के लिए गवाहियाँ, 456.

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का अनुभव, मनुष्य की महिमा को धूल में मिला देने वाला परमेश्वर का कार्य है। दानिय्येल के साथ जो पुरुष थे, जिस दर्शन को देखकर वे भागने पर मजबूर हो गए, वह मसीह के प्रकट होने का 'कार्यकारक' स्त्रीलिंग दर्शन था, और जैसे ही दानिय्येल की आत्म-धार्मिकता धूल में मिल गई, उसे तीन स्वर्गदूतीय स्पर्श मिले, जिन्होंने अंततः दानिय्येल को संदेश देने के लिए सामर्थ्य दी।

1888 में, बलवान स्वर्गदूत विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के संदेश के साथ अवतरित हुआ, जैसा कि एल्डर जोन्स और वैगनर ने प्रस्तुत किया था। वही स्वर्गदूत 11 सितंबर, 2001 को उसी विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के संदेश के साथ फिर से अवतरित हुआ। यह एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी की शुरुआत का संकेत था। एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के अंत में, आरंभ का संदेश फिर से दोहराया जाता है, क्योंकि यीशु हमेशा किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत से दर्शाते हैं।

11 अगस्त, 1840 को वही स्वर्गदूत उतरा और 1840 से 1844 तक संपन्न हुए तीन चरणों की शुरुआत की। वे तीन चरण 11 अगस्त, 1840 को पहले स्वर्गदूत के सशक्तिकरण से आरंभ हुए, 19 अप्रैल, 1844 को दूसरे स्वर्गदूत के आगमन से आगे बढ़े, और 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर पूर्ण हुए। वह इतिहास 11 सितंबर, 2001 को तीन स्वर्गदूतों में से पहले के उतरने का पूर्वचित्रण था, जिसके बाद 18 जुलाई, 2020 की निराशा के समय दूसरा स्वर्गदूत आया, और यह शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय तीसरे स्वर्गदूत के आगमन के साथ समाप्त होता है।

उस इतिहास के अंत में, जब मीकाएल सड़कों पर मृत्यु के साढ़े तीन दिनों के बाद मूसा और एलिय्याह को पुनर्जीवित करने के लिए उतरता है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में दर्शाया गया है, और जैसा कि दानिय्येल के शोक के इक्कीस दिनों द्वारा भी दर्शाया गया है, मसीह फिर से उतरते हैं। वह पहले अपनी महिमा का दर्शन कराते हैं, ऐसा

दर्शन जो मनुष्य की महिमा को धूल में मिला देता है और एक पृथक्करण उत्पन्न करता है। जब दानिय्येल धूल में गिर चुका होता है, और 'प्रेरणार्थक' स्त्रीलिंगी दर्शन को निहारकर परिवर्तित हो चुका होता है, तब उसे पहली बार गब्रिएल स्पर्श करता है और उसे उसके काँपते पैरों पर खड़ा कर देता है।

तब प्रधान स्वर्गदूत मीखाएल "मूसा को जिलाने" के लिए उतरता है और दानिय्येल को दूसरी बार छूता है; वह इस सच्चाई से अभिभूत होकर शक्तिहीन रह जाता है कि वह वास्तव में अपने प्रभु से बात कर रहा था। फिर गब्रिएल आता है और उसे तीसरी बार छूता है, और शीघ्र आने वाले रविवार के क़ानून में ध्वजवाहक बनने के कार्य के लिए उसे सामर्थ्य देता है। ये तीन स्पर्श प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूतों के प्रतीक हैं, यद्यपि वे एक ही दिन में घटित होते हैं।

पहले स्वर्गदूत के अनुभव में मसीह का बिजली की तरह प्रकट होना, "कारक" दर्शन जो अलग करता है, और पहला स्पर्श जो दानिएल को उसकी मानवीय महिमा की धूल से उठा देता है, शामिल हैं। पहला स्वर्गदूत उन तीनों चरणों को समेटे हुए है जो प्रथम में शामिल हैं, क्योंकि वह प्रथम संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। यह संयोग नहीं है कि पहला स्पर्श पद नौ से ग्यारह में दर्ज है।

फिर भी मैंने उसके वचनों का स्वर सुना; और जब मैंने उसके वचनों का स्वर सुना, तब मैं मुँह के बल गहरी नींद में पड़ गया, और मेरा चेहरा भूमि की ओर था। और देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ, और मुझे घुटनों और हाथों की हथेलियों के बल सहारा देकर उठा दिया। और उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, अत्यंत प्रिय पुरुष, जो बातें मैं तुझ से कहता हूँ उन्हें समझ, और सीधा खड़ा हो जा; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ।" और जब उसने यह बात मुझ से कही, तब मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। दानिय्येल 10:9-11.

दूसरे स्पर्श, जो स्वयं मसीह ने दिया, का अनुभव दानिय्येल को बोल न सकने की अवस्था से अपने प्रभु से बोल सकने की अवस्था में बदल देता है। उस दूसरे स्पर्श में दानिय्येल में श्वास नहीं रहती, इसलिए यहाँ उसे यहजेकेल के अध्याय सैंतीस के प्रथम संदेश की स्थिति में दिखाया गया है।

और जब उसने मुझ से ऐसी बातें कहीं, तो मैंने अपना मुख भूमि की ओर झुका लिया, और मैं निःशब्द हो गया। और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के समान एक ने मेरे होंठों को छुआ; तब मैंने अपना मुँह खोला और जो मेरे सामने खड़ा था, उस से कहा, हे मेरे स्वामी, इस दर्शन के कारण मेरी पीड़ाएँ मुझ पर आ पड़ी हैं, और मुझ में कोई शक्ति नहीं रह गई है। क्योंकि इस मेरे स्वामी का दास इस मेरे स्वामी से कैसे बात कर सकता है? क्योंकि मेरे विषय में, तुरंत ही मुझ में कोई शक्ति नहीं रही, और मेरे भीतर श्वास भी नहीं बची। दानिय्येल 10:15-17.

यहजेकेल के दूसरे संदेश में, चारों पवनों का संदेश हड्डियों पर फूँका जाना है, ताकि वे जीवित हो उठें और एक शक्तिशाली सेना की तरह खड़ी हो जाएँ। उस सेना का सशक्तिकरण तीसरे स्पर्श द्वारा दर्शाया गया है।

तब फिर एक मनुष्य के समान दिखाई देने वाला आकर मुझे छू गया और उसने मुझे बल दिया, और कहा, 'हे अत्यन्त प्रिय मनुष्य, मत डर; तुझे शान्ति हो; बलवन्त हो, हाँ, बलवन्त हो।' और जब उसने मुझसे यह कहा, तो मुझे बल मिला, और मैंने कहा, 'मेरे प्रभु बोलें; क्योंकि आपने मुझे बल दिया है।' तब उसने कहा, 'क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के प्रधान से लड़ने के लिए लौट जाऊँगा; और जब मैं निकल जाऊँगा, तो देख, यूनान का प्रधान आ जाएगा। पर मैं तुझे वह बताऊँगा जो सत्य के लेख में लिखा हुआ है; और इन बातों में मेरे साथ ठहरने वाला कोई नहीं, केवल तुम्हारा प्रधान मीकाएल। और मैं भी, मादी दारा के पहले वर्ष में, उसे स्थिर करने और बल देने के लिए खड़ा रहा। और अब मैं तुझे सत्य बताऊँगा: देख, फ़ारस में अभी तीन राजा उठ खड़े होंगे; और चौथा उन सब से बहुत अधिक धनी होगा; और अपनी धन-सम्पत्ति से प्राप्त सामर्थ्य के कारण वह सबको यूनान के राज्य के विरुद्ध उकसाएगा।' दानिय्येल 10:18-11:2.

यहजेकेल अध्याय सैंतीस में जो सन्देश उन दो गवाहों को जीवन प्रदान करता है, वह तीसरे हाथ का इस्लाम का सन्देश है; परन्तु क्रमशः, वह सन्देश जिसे गब्रिएल, मीकाएल द्वारा मूसा को उठाकर और उसे एक ध्वज के रूप में

स्वर्ग में ले जाने के दृष्टान्त में पहचानता है, संयुक्त राज्य अमेरिका के अंतिम राष्ट्रपति का सन्देश है। वह छोटे राष्ट्रपति (रिपब्लिकन सींग) का सन्देश है, जो 2020 में वध किया गया, जैसा कि सच्चा प्रोटेस्टेंट सींग भी किया गया था। दानिय्येल की कथा में, सच्चे प्रोटेस्टेंट सींग के लिए शोक के दिनों से हुआ पुनरुत्थान, रिपब्लिकन सींग के पुनरुत्थान की पहचान की ओर ले गया।

दानिय्येल अध्याय दस में “दर्शन” या “प्रकट रूप” शब्द का प्रयोग सात बार किया गया है। उन सातों संदर्भों की पहचान उसी इब्रानी शब्द से की गई है, इस अपवाद के साथ कि उनमें से तीन बार वह शब्द स्त्रीलिंग रूप में है और अन्य चार बार पुल्लिंग रूप में है। सात पूर्णता की संख्या है, और तीन-चार का वह संयोजन जो सात के बराबर होता है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है, जहाँ सात कलीसियाओं में से अंतिम तीन, और सात मुहरों में से अंतिम तीन, और सात तुरहियों में से अंतिम तीन को प्रथम चार से विशेष रूप से पृथक् ठहराया गया है।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक ही पुस्तक हैं, और इस अर्थ में दानिय्येल और यूहन्ना अंतिम दिनों का एक ही प्रतीक हैं। अध्याय दस में मसीह का जो दर्शन है, वही प्रकाशितवाक्य के अध्याय एक में मसीह का दर्शन है।

प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय में, यूहन्ना अपने पीछे से एक आवाज़ सुनता है और बोलने वाले को देखने के लिए मुड़ता है।

मैं प्रभु के दिन आत्मा में था, और मेरे पीछे से तुरही के समान एक बड़ी आवाज़ सुनी, जो कहती थी, ‘मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और अंतिम हूँ; और जो कुछ तू देखता है, उसे एक पुस्तक में लिख, और उसे एशिया में जो सात कलीसियाएँ हैं, उनके पास भेज: इफिसुस, स्मिर्ना, पर्गमुस, थुआतीरा, सार्दिस, फिलाडेल्फिया और लौदिकिया।’ प्रकाशितवाक्य 1:10, 11.

चाहे वह दानिय्येल अध्याय दस में तीन स्पर्श हों, या प्रकाशितवाक्य के अध्याय एक में वही दर्शन, या यहजेकेल के अध्याय सैंतीस में दो संदेश, या यशायाह का वेदी पर से ली हुई जलती हुई अंगारी से स्पर्श किया जाना, यह अनुभव अंतिम चेतावनी के संदेश के सामर्थ्य-प्रदान की पहचान कराता है, और वह संदेश जुलाई 2023 में दो गवाहों के पुनरुत्थान से आरम्भ होता है। दानिय्येल, यूहन्ना, यहजेकेल और यशायाह—ये सभी उस संदेशवाहक का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने पीछे “पुराने मार्गों” से आनेवाली “वाणी” को सुनता है, जो पूछती है, “मैं किस को भेजूं?” जब वह संदेशवाहक उत्तर देता है, “मैं यहां हूँ, मुझे भेज,” तब वह सामर्थ्य पाता है और अपना स्वर ऊंचा करता है, मानो जंगल में पुकारनेवाला कोई हो। “जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।”

हम अपने अगले लेख में इस अध्ययन को जारी रखेंगे।

अभी वर्णित अवसर पर, स्वर्गदूत गब्रिएल ने दानिय्येल को उतनी ही शिक्षा दी, जितनी वह उस समय ग्रहण कर सकता था। कुछ वर्षों बाद, हालांकि, भविष्यद्वक्ता ने उन बातों के बारे में, जो अभी पूरी तरह समझाई नहीं गई थीं, अधिक जानने की इच्छा की, और वह फिर से परमेश्वर से ज्योति और बुद्धि की खोज करने लगा। ‘उन दिनों मैं, दानिय्येल, तीन पूरे सप्ताह तक शोक करता रहा। मैंने कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया; न मांस और न ही दाखमधु मेरे मुख में आया; न ही मैंने अपने शरीर पर कोई तेल लगाया... तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा—देखो, एक व्यक्ति जो मलमल के वस्त्र पहने था, और जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी बेरिल रत्न के समान था, और उसका मुख बिजली की चमक जैसा; उसकी आँखें आग के दीपकों के समान; और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव रंग में चमकाए हुए पीतल के समान थे; और उसके वचनों की आवाज़ जनसमूह की ध्वनि के समान थी’ (दानिय्येल 10:2-6).

यह वर्णन उस वर्णन के समान है जो यूहन्ना ने तब दिया था जब पटमोस द्वीप पर उन्हें मसीह प्रकट हुए थे। कोई और नहीं, स्वयं परमेश्वर का पुत्र दानिय्येल को प्रकट हुआ। हमारे प्रभु एक अन्य स्वर्गदूत के साथ आते हैं ताकि दानिय्येल को यह सिखाएँ कि अंतिम दिनों में क्या होने वाला है।

विश्व के उद्धारकर्ता द्वारा प्रकट किए गए महान सत्य उन लोगों के लिए हैं जो सत्य को छिपे हुए खजानों की तरह खोजते हैं। दानियेल एक वृद्ध व्यक्ति था। उसका जीवन एक अन्यजाति दरबार के आकर्षणों के बीच बीता था, और उसका मन एक महान साम्राज्य के मामलों में उलझा हुआ था। फिर भी वह इन सब से अलग होकर परमेश्वर के सम्मुख अपनी आत्मा को दीन करता है और परमप्रधान के उद्देश्यों का ज्ञान खोजता है। और उसकी विनितियों के उत्तर में स्वर्गीय दरबारों से प्रकाश उन लोगों के लिए प्रेषित किया गया जो अंतिम दिनों में जीवित होंगे। तो फिर हमें कितनी गंभीरता से परमेश्वर को खोजना चाहिए, ताकि वह हमारी समझ खोल दे और हम स्वर्ग से हमारे पास लाई गई सच्चाइयों को समझ सकें।

'मैं, दानियेल, अकेला ही वह दर्शन देख रहा था; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे, उन्होंने वह दर्शन नहीं देखा; परन्तु उन पर बड़ी थरथराहट छा गई, इसलिए वे छिपने के लिए भाग गए.... और मुझ में कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरी शोभा मेरे भीतर भ्रष्टता में बदल गई, और मुझ में बल शेष न रहा' (पद 7, 8)। जो वास्तव में पवित्र किए गए हैं, उन सबका अनुभव भी इसी प्रकार का होगा। मसीह की महानता, महिमा और सिद्धता के विषय में उनकी दृष्टि जितनी स्पष्ट होगी, उतनी ही स्पष्टता से वे अपनी कमजोरी और अपूर्णता को देखेंगे। उनमें निष्पाप चरित्र का दावा करने की प्रवृत्ति नहीं होगी; जो उन्हें अपने में सही और शोभनीय प्रतीत हुआ है, वह मसीह की पवित्रता और महिमा की तुलना में केवल अयोग्य और नाशमान दिखाई देगा। जब मनुष्य परमेश्वर से अलग हो जाते हैं, जब मसीह के विषय में उनकी दृष्टि अत्यंत अस्पष्ट होती है, तभी वे कहते हैं, 'मैं निष्पाप हूँ; मैं पवित्र किया गया हूँ।'

"अब गब्रिएल भविष्यद्वक्ता को दिखाई दिया, और इस प्रकार उससे बोला: 'हे दानियेल, अत्यन्त प्रिय पुरुष, मैं जो तुझ से बातें करता हूँ, उन्हें समझ, और सीधा खड़ा हो जा; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने मुझ से यह वचन कहा, तो मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझ से कहा, मत डर, दानियेल; क्योंकि जिस दिन से तू समझने के लिए अपना मन लगाकर अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को नम्र किया, उसी दिन से तेरी बातें सुनी गई, और मैं तेरी बातों के कारण आया हूँ' (पद 11, 12)."

स्वर्ग के महाराजाधिराज ने दानियेल को कितना महान सम्मान दिया है! वह अपने काँपते हुए दास को ढाढ़स देता है और उसे यह आश्वासन देता है कि उसकी प्रार्थना स्वर्ग में सुन ली गई है। उस उष्ण विनती के उत्तर में स्वर्गदूत गब्रिएल को फारस के राजा के हृदय पर प्रभाव डालने के लिए भेजा गया। जब दानियेल उपवास और प्रार्थना कर रहा था, उन तीन सप्ताहों के दौरान उस सम्राट ने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणाओं का विरोध किया था; परन्तु स्वर्ग का राजकुमार, प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल, उस हठी राजा के हृदय को मोड़ने और दानियेल की प्रार्थना के उत्तर में कोई निर्णायक कार्रवाई कराने के लिए भेजा गया।

"और जब उसने मुझसे ऐसे वचन कहे, तब मैंने अपना मुख भूमि की ओर कर लिया, और मैं मूक हो गया। और देखो, मनुष्यों की सन्तानों के सदृश एक ने मेरे होंठों को छू लिया.... और कहा, हे अति प्रिय मनुष्य, मत डर; तुझे शान्ति मिले; दृढ़ हो, हाँ, दृढ़ हो। और जब उसने मुझसे कहा, तब मैं बलवंत हुआ और कहा, मेरे प्रभु बोलें; क्योंकि तूने मुझे बल दिया है' (पद 15-19)। दानियेल पर प्रकट हुई दिव्य महिमा इतनी महान थी कि वह उस दर्शन को सहन न कर सका। तब स्वर्ग के दूत ने अपनी उपस्थिति की दीप्ति को आच्छादित किया और भविष्यद्वक्ता के सामने 'मनुष्यों की सन्तानों के सदृश एक' के रूप में प्रकट हुआ (पद 16)। अपनी दिव्य शक्ति से उसने इस सत्यनिष्ठ और विश्वासयोग्य पुरुष को बल दिया, ताकि वह उस संदेश को सुन सके जो उसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था।"

"दानियेल परमप्रधान का समर्पित दास था। उसका दीर्घ जीवन उसके प्रभु की सेवा के उदात्त कार्यों से परिपूर्ण था। उसके चरित्र की पवित्रता और उसकी अटल निष्ठा की बराबरी केवल उसके हृदय की नम्रता और परमेश्वर के समक्ष उसके पश्चाताप से होती है। हम दोहराते हैं, दानियेल का जीवन सच्चे पवित्रीकरण का एक प्रेरित उदाहरण है।" पवित्र जीवन, 49-52.